प्रवाह...

आर. सी. ए. गर्ल्स (पी. जी.) कॉलेज, मथुरा का अर्धवार्षिक पत्र

अक्टूबर 2013 सप्तम अंक

In this issue....

From the Principal's Desk

Editorial

Students' Corner

Expert's Corner

Bulletin Updates

Forthcoming Events

Achievements

Memories

Editorial Board...

Patron
- Dr. Preeti Johari

Chief Editor
- Dr. Anju Bala Agrawal

Editors
- Dr. Archana Pal
- Dr. Bharati Sagar

Creative Head
- Dr. Sandhya

Highlights...

Guests releasing Souvenir in the International Seminar - 2013

Lighting the lamp in the International Seminar 2013

From the Principal's Desk...

Dear students & parents,

Once again there is an opportunity to share my feelings and thoughts with you through 'PRAVAAH'. As the new session begins, the campus is now full of life and vitality. It is, in fact, you, the students, who keep the campus breathing with life, and the institution growing with momentum On the other hand, it is your institution which transforms you into responsible citizens. Wherever you go, you always carry the name of your *Alma-mater* with you. Complementary to it, an institution is recognized by the achievements of its students and *Alumni*. Thus, in this way, the growth of both is interdependent.

But, the most important instrument in this growth is the teacher. A teacher is one who gathers *information* and transforms it into *knowledge* for you. A teacher is one who helps you to find happiness in simple pleasures and see the rainbow and not the falling rain. A teacher is some one who encourages you to live each day to your full potential and find good in everything you see and grooms you into a person only you were meant to be. Therefore, you must always remain indebted to your institution and your teachers. Further, so long as you are in the campus, the more you respect your teachers, the more you'll enrich yourself with knowledge, love & care.

Parents, it is also the most appropriate time to share our future plans with you. The focus of the college is to impart quality education to all its students. As we have already started regular classes prior to most of the institution in the city, our emphasis is on maintaining discipline, conducting co-curricular & sports activities at regular intervals, building up confidence in girls and implanting high moral values in them. I think, you people will also agree that without deep rooted values, no one can stay on the top of the success tree.

However, without your support, all our effort will be a sheer wastage. We expect the parents to be cooperative and suggestive and the students to be regular, sincere, obedient and above all, honest in thoughts and deeds.

From the coming pages of 'PRAVAAH' you'll become aware of the current and forthcoming events and activities of the session. Prepare yourself to excel in the events of your interest besides working hard in your studies. My beloved friends, I always dream for you to be the Role Models in the areas/fields of your interest. And I'm sure, you'll make my dream come true.

With blessings

Preeti Johari

Principal

Editorial...

Dear students,

Through this column, I want to tell you about freedom which you youngsters cherish most. Mankind has always accorded the highest value to freedom or liberty. It is the brightest achievement of the human society. The story of progress of human civilization is the tale of mankind's struggle for freedom. Man by nature wants to be free and without any bondage. Being free is not an easy task. It means being responsible to oneself. Complete freedom means complete responsibility towards one's thoughts, decisions and actions. John Milton once said-when people cry 'freedom', they mean to be unrestrained, self-willed or indisciplined, but one has to be wise and good before being able to love freedom. The word 'self-government' is often used for the word freedom.

For all round development of a man, freedom serves the purpose of a foundation stone and makes him conscious of his duties. These characteristic are not confined to an individual only but to the social life also. When one's freedom becomes a curse for the neighbours, it ceases to be freedom. Freedom reflects evolutional stage of the individual and the society.

Freedom does not mean to be indifferent or running away from a situation. Freedom means spontaneous inward willingness to think in a right and responsible way. A free man has to be a most responsible person because he has to be accountable for all he does and thinks, unless there is a sense of discipline, the freedom for carrying out a work in a responsible manner cannot be there. If you realise this truth, you can carry mankind on the path of progress. If you don't realize this truth and become dictators, you will have to meet the fate of Ravan, Duryodhan, Hitler, etc. The human society has never put up with people of this class and will never do so in future as well.

So, dear students, aspire for freedom but not without the consciousness of duty to the society and consideration of others' freedom.

Anju Bala Agrawal

Chief Editor

Memories...

Dental Check-up Camp

Yajna on the Foundation Day
4th Oct. 2012

Cultural Bonanza during the
International Seminar 2013

Cultural Bonanza during the
International Seminar 2013

Hindi Day Celebrations

Students Interacting with Dr. Mohini Giri
during the International Seminar 2013

एकाग्रता के साथ प्रयत्न करें

राधिका
बी.ए. तृतीय वर्ष

कर्म ही जीवन है। कर्म की व्यापक भावना से प्रेरित होकर गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है: ***"कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जे जस करई सो तस फल चाखा"***

लेकिन जिन्दगी में परिश्रम के लिए अगर जरूरत है, तो वह है एकाग्रता और यदि कोई खराब बात है तो वह है अपनी शक्तियों को बिखेर देना। चिन्ता कैसी भी हो परिश्रम को अपनी मंजिल तक नहीं पहुँचा सकती है।

कोलम्बस अपना सर्वस्व दाँव पर लगाकर भारत की खोज करने निकला था। एक समय ऐसा आया कि सागर की उछाल एवं सर्पिणी लहरों से भयाक्रान्त होकर उसके साथियों ने कोलम्बस को परामर्श दिया वह अब आगे न जाए वापस लौट चले। महासागर का यह ताण्डव भयावह है। आगे बढ़ने का अर्थ है काल के मुंह में प्रवेश करना। लेकिन कोलम्बस एकाग्रता के साथ प्रयत्न करता रहा और सफल हुआ।

नैपोलियन कहते थे कि विश्व में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जो असम्भव हो। सिर्फ उसके लिए निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए। असम्भव शब्द को ही शब्दकोष से निकाल देना चाहिए। बढ़ने वालों को किसने बांधा है।

बाधाएँ कब बाँध सकी है, बढ़ने वालों को,
विपदाएँ कब रोक सकी है, मरकर जीने वालों को।
आदमी चाहे तो तकदीर बदल सकता है,
आदमी सोच तो ले उसका इरादा क्या है।

विवेकानन्द ने ठीक ही कहा है कि "मेरे साहसी युवकों, यह विश्वास रखो कि तुम ही सब महान् कार्य करने के लिए इस धरती पर आए हो। गीदड़ घुड़कियों से भयभीत मत हो जाना और कार्य में लग जाना।"

भगवान उसी की सहायता करता है, जो अपनी सहायता खुद करता है।
एक चिंगारी कहीं से भी ढूंढ़ लाओ दोस्तो इस दिए में तेल की भीगी बाती तो है।

आज जरूरत है तो एक चिंगारी की, जो दिए को जला सके। अतः यदि हम एकाग्रता से परिश्रम करते हैं तो सफलता आज नही तो कल अवश्य मिलेगी।

होके मायूस न यूँ, शाम से ढलते रहिए, जिन्दगी भोर है सूरज से निकलते रहिए,
एक ही पाँव पर ठहरोगे तो थक जाओगे, धीरे-धीरे ही सही राह पर चलते रहिए।

बिटिया प्यारी

निर्मल (नीरू) चौधरी
बी.ए. प्रथम

तुम्हें झील कहूँ या झरना, तुम्हें फूल कहूँ या क्यारी,
दो घरों को रोशन करतीं, जग में यह बिटिया प्यारी।

उस परम पिता को देखो, जिसने विज्ञान रचाया,
नारी व पुरूष बनाकर, जीवन का चक्र चलाया।
इस चक्र को जो भी रोके, करता है पाप वो भारी,
दो घरों को रोशन करती, जग में यह बिटिया प्यारी।।

यही घोषा यही अपाला, यही रानी लक्ष्मीबाई,
यही रामचन्द्र जैसों को इतिहास में लेकर आई।
यही वीर शिवाजी राणा की बनती है महतारी,
दो घरों को रोशन करती, जग में यह बिटिया प्यारी।।

सेवा में सबसे पहले, चाहे आँगन हो या खेती,
पुत्रों से पहले लाकर, ये पिता को पानी देती।
जो ख्याल हमेशा रखती, वही बनी आज दुखियारी,
दो घरों को रोशन करती, जग में यह बिटिया प्यारी।।

मैं जिन्दा हूँ

राधिका
बी.ए. तृतीय वर्ष

मरी नहीं मैं जिंदा हूं,
सफेद रंग का परिंदा हूं।
नाम नही कोई मेरा,
न नाम मेरा तुम जानो।
मेरी धड़कन को सुन लो,
मेरी आवाज को तो पहचानो।
इंसाफ चाहिए मुझको,
जो तुम ही दिला सकते हो।
मैं सो गई तो क्या हुआ,
तुम तो देश को जगा सकते हो।
दामिनी नाम रखकर,
इस देश में बनी मेरी पहचान।
मैं नही चाहती किसी के साथ हो,
जैसा मेरा हुआ अंजाम।
मरी नही हूं मैं जिंदा हूं,
बस सफेद रंग का परिंदा हूं।

स्वतन्त्रता से पूर्व भारतीय चित्रकला

वैशाली

बी.ए. तृतीय वर्ष

✍1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के समय भारत की परम्परागत राजस्थानी, मुगल तथा पहाड़ी चित्र शैलियों का ह्रास हो चुका था। इसी समय ब्रिटिश काल पद्धति का भारत में आगमन आरम्भ हुआ और उन्नीसवीं सदी के अन्त तक इसका पर्याप्त प्रसार हुआ।

✍लगभग 1905 से 1920 तक बंगाल शैली पर्याप्त रूप से विकसित हुयी। देशभर में इसका प्रचार हुआ और इस कला-आन्दोलन को राष्ट्रीय कहा गया। बंगाल स्कूल का अभ्युदय भारतीय चित्रकला के क्षेत्र में परम्परागत चित्रकला की पुनः प्राण-प्रतिष्ठा का द्योतक है। 1920 के लगभग इस क्षेत्र में एक नया मोड़ आया। एक कारण तो यह था कि अवनीन्द्रनाथ के सामने केवल मुगल तथा अजन्ता शैली का ही आदर्श था। उस समय तक अन्य शैलियों की चित्रकला की खोज पूर्ण नहीं हुई थी। दूसरा कारण यह था कि विदेशों से भारत का सम्पर्क होने के कारण तथा भारतीय कलाकारों के विदेश भ्रमण के कारण यूरोप की नई-नई शैलियों का भारत में आगमन हुआ। कलाकारों के सामने दो ही विकल्प रह गये। या तो वे आधुनिक कला को अपनाये या प्राचीन शैलियों का अनुकरण करे।

✍ई.वी. हैवेल एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने विदेशी होते हुये भी भारतीय कला की आत्मा को सही रूप में पहचाना। वह भारत में मद्रास कला विद्यालय के प्राचार्य बन कर आये। हैवेल जानते थे कि भारतीय कला का जीवन सृजनात्मक है। अवनीन्द्र जी ने हैवेल जी के साथ मिलकर कलकत्ता कला विद्यालय के प्रशिक्षण में नित-नवीन परिवर्तन किये। हैवेल और अवनीन्द्र जी के संयुक्त प्रयास से भारतीय कला क्षेत्र में नया जीवन संचारित हो गया। निरंतर श्रम, संकल्प और सच्ची साधना के बल पर अवनीन्द्र जी ने इतनी सफलता तो पाई कि तत्कालीन भारतीय कलाकारों में जो पाश्चात्य कला-प्रवृत्तियों के प्रति झुकाव था वह कम हुआ।

✍अवनीन्द्र बाबू के सुयोग्य, प्रतिभाशाली और लगनशील शिष्यों में नन्दलाल बसु, समरेन्द्रनाथ गुप्त, सुरेन्द्रनाथ गांगुली, असित कुमार हाल्दार, के. वेंटप्पा, शैलेन्द्र नाथ डे, शारदा चरण उकील, प्रमोद कुमार चटर्जी, देवीप्रसाद राय चौधरी आदि नाम प्रमुख हैं जिन्होंने पूरे भारत में इस शैली को प्रचारित और प्रसारित किया। इस देशव्यापी राष्ट्रीय जागृति ने सारे देश के कलाकारों में नयी चेतना का उन्मेष भरा।

✍बंगाल शैली की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि इसका जन्म उत्थान भावना से हुआ है। इसके संस्थापकों ने भारतीय मृतप्राय चित्रकला में पुनः प्राण-प्रतिष्ठा के लिये इस शक्ति का आह्वान किया था। बंगाल शैली अपने व्रत में सफल रही, इसने जो कार्य किये वे प्रभावी रहे हैं और भविष्य के लिये आधार बने हैं। अवनीन्द्र नाथ की चित्र शैली ने भारतीय लोक-जीवन से स्वाभाविक प्रेरणा ग्रहण की और उसने भारतीय एवं यूरोपीय भाव-धारा एवं दोनों के भेद स्पष्ट किये और भारतीय चित्रकला के आंदोलन को राष्ट्रीय चेतना प्रदान की।

✍स्वतन्त्रता के पूर्व तक लगभग सभी कलाकार आकृति मूलक चित्रण करते थे। सन् 1930 में रवीन्द्रनाथ के चित्रों की प्रदर्शनी हुई। गगनेन्द्रनाथ ने इसी समय घनवादी शैली में अनेक चित्र बनाये। 1925 के लगभग यामिनीराय ने बंगाल की लोक-कला के आधार पर नये प्रयोग किये। सन् 1933 में लंका में जॉर्ज कीट ने भी एक नई शैली का आरम्भ किया। इन सब ने ठाकुर शैली को असामयिक कर दिया।

✍राजा रवि वर्मा ने विदेशी प्रभाव के विषाक्त वातावरण में भारतीय विषयों को आधार बनाकर अपने प्रयासों से ही उनके सस्ते संस्करणों को जन-साधारण तक सुलभ कराया। भारतीय कला क्षेत्र में मोशाय नन्दलाल बसु एक समूचे युग के प्रवर्तक कहे जा सकते हैं। असित जी की कल्पना शीलता का कोई अन्त नहीं। इन्होंने अपनी शैली में विषयानुरूप परिवर्तन किया है। मजूमदार जी ने भारतीय कला को पुनः प्रतिष्ठा देने के लिये अपनी कला शक्ति को आधार बनाया और इनके नेतृत्व ने भारतीय कला को पुनः प्रतिष्ठा प्रदान करने में बहुत सहायता की। विषयों के चुनाव में रवीन्द्र जी ने कल्पना और अद्‌भुत लोक के मध्य हमेशा निरपेक्ष या अमूर्त का ही चुनाव किया। इनके चित्रों में रंग और रेखा की एकता ने भारतीय चित्रकला का एक नया मार्ग प्रशस्त किया। उनकी कृतियों में सर्वत्र उनके युग की छाप मिलती है। गगनेन्द्र जी के चित्रांकनों में हास्य-विनोद है, रंग की सक्रियता और रोमानियत है। अमृता शेरगिल ने ऐसे चित्रों का सृजन किया जिनमें भारतीय-यूरोपीय दोनो पृष्ठ-भूमियों का समन्वय था। इनकी सफलता ने भारतीय चित्रकला के क्षेत्र में नये आधारों की पृष्ठ भूमि बना दी।

✍इन सब प्रयोगों से भारतीय कला अनेक नये-नये मार्गों पर

चलने लगी। कलाकार अपनी कला में मौलिकता और भारतीयता की आवश्यकता अनुभव करने लगे। फलस्वरूप आज भारत की चित्रकला जहाँ आधुनिकता में किसी भी देश से पीछे नहीं है। वहाँ वह मौलिकता में भी किसी से कम नहीं है।

चित्रकला में विभिन्न रस

सावित्री शर्मा
बी.ए. द्वितीय वर्ष

भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में रस की विस्तृत विवेचना की है। इसके विश्लेषण और वर्गीकरण करने से हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि रस परमानन्द की वह दशा है, जिसमें काव्य एवं चित्र द्वारा उत्पन्न स्वाभाविक आकर्षण और आन्तरिक अनुभूति से एक ऐसी स्थिति को प्राप्त किया जाता है, जिसमें नियंत्रित भावनाओं का रस अभिव्यक्तिकरण होता है। चित्रण में रस के अधीन ही भावभिव्यक्ति होती है नाट्यशास्त्र में आठ रस, काव्य शास्त्र में नौ रस और चित्रकला में नौ से ग्यारह रसों तक का वर्णन मिलता है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण के चित्रसूत्र में काव्यशास्त्र में वर्णित नवरसों–श्रृंगार, हास्य, करूण, वीर, रौद्र, भयानक, वीभत्स, अद्‌भुत और शान्त का ही उल्लेख मिलता है। शिल्पशास्त्र समरांगण सूत्रधार चित्रकला के क्षेत्र में ग्यारह रसों– श्रृंगार, हास्य, करूण, रौद्र, प्रेम, भयानक, वीर, प्रत्याय, वीभत्स, अद्‌भुत तथा शान्त को प्रस्तुत करता है।

चित्रकला में श्रृंगार रस

चित्रण का विषय मुख्यतः रतिभाव पर आधारित होता है तथा आकृतियों में आकर्षण युक्त कान्ति एवं लावण्य–युक्त माधुर्य हुआ करता है। आकृतियों की चितवन, हाव–भाव, मुद्राओं, आलम्बन, आलिंगन, चुम्बन, स्पर्श, वासना–प्रदर्शन आदि का स्पष्ट स्वरूप मुद्रित किया जाता है। समरांगण सूत्रधार में भूकम्प–रहित तथा प्रेम गुणान्वित श्रृंगार रस दर्शाया गया है और इस रस में अपने प्रिय के प्रति मनोहर ललित चेष्टायें होती है। जिसके अनुकूल ही नायक–नायिका के कामोद्दीपक व्यवहार, उनकी वेशभूषा, शरीर के अलंकृत आभूषणों एवं मिलन अथवा विरह के प्रसंगो का स्पष्ट प्रदर्शन होता है।

चित्रकला में हास्य रस

चित्रकला में हास्य रस के चित्रण का स्थायी भाव 'हास ' होता है। आकृतियाँ विचित्र सी चित्रित की जाती हैं। शरीर के अंगों में सन्तुलन नहीं होता है। ऐसे चित्र हास्य का आनन्द कराते हैं और अधिकतर कुबड़ों, बौनों तथा कुछ विकट रूप से ताकते हुये एवं व्यर्थ ही हाथ को सिकोड़े हुये व्यक्तियों के चित्र हास्य–रस को संचारित करते हैं। हास्य रस के चित्रण में विशेष प्रकार का विनोदयुक्त रूपविन्यास रहता है और ऑखे फैली रहती हैं और होंठ फड़कते हैं। रूप–अलंकार हास्य जनित होता है।

चित्रकला में करूण रस

करूण रस का चित्रण–याचना, वियोग, शरणागत, त्याग, तथा व्यसन आदि में दयनीय की तरह दिखाई देता है। ऑसुओं से कपोल–प्रदेश भिगाने वाला, शोक से आँखों को संकुचित करने वाला और चित्त को संताप देने वाला करूण रस कहलाता है। करूण रस का मूल रंग भूरा (कपोती) माना गया है।

चित्रकला में रौद्र रस

रौद्र रस के चित्रण में कठोरता, क्रोध, वध, हत्या, चमचमाते हुये शस्त्रों आदि का चित्रण किया जाता है। रौद्र रस का चित्रण कठोर, विकार, क्रोध तथा हिंसात्मक भाव से युक्त होता है। रूपविन्यास और शारीरिक लक्षणों के अन्तर्गत जिसमें ललाट प्रदेश कठोर हो जाता है, आँखे लाल हो जाती हैं तथा अधरोष्ठ दाँतों से काटे जाते हैं, उसे रौद्र रस कहते हैं। आकृति के नेत्र, बाल, भौहें तनी हुई और बाहें ऊपर को उठी हुई चित्रित करके, उनके कायिक अनुभवों को प्रदर्शित किया जाता है।

चित्रकला में वीर रस

वीर रस के चित्रण में प्रतिभा, शूरता, उदारता, तथा गर्व का भाव प्रदर्शित होना चाहिये। धैर्य, पराक्रम एवं बल को उत्पन्न करने वाला यह रस वीर रस के नाम से प्रसिद्ध होता है। आकृतियों में उत्तेजना, हर्ष और चंचलता रहती है। इसमें कठोर, सशक्त और गतिमय रेखाओं का प्रयोग होता है। इसमें गहरे रक्तवर्ण के साथ–साथ गहरे हरे रंग की भी योजना रहती है। क्रोध तथा उत्साह दोनों की सम्मिलित योजना वीर रस के चित्रण का आधार है।

चित्रकला में भयानक रस

भयानक रस के चित्रण में दुष्ट, उन्मत्त, हिंसक और घातक प्राणियों को अंकित करना चाहिये। भयानक रस के कारण इस चित्रण में भंयकर आकृति आलम्बन (मुख्याकृति)

रूप में निरूपित की जानी चाहिए और मुद्राओं एवं दृष्टि में भी डरावनेपन और कम्पन आदि के भय-भावों को दिखाना चाहिये। शत्रु-दर्शन से उत्पन्न त्रास एवं सम्भव से लोचनों को उद्भ्रान्त करने वाला और हृदय को क्षुब्ध करने वाला रस, भयानक रस कहलाता है। रेखाओं में कठोरता, असन्तुलन और उलझन होती है । इसमें बहुत गहरे एवं काले रंग की प्रधानता होती है।

चित्रकला में वीभत्स रस

जिस चित्र में श्मशान आदि के निन्दित दृश्यों, घात के साधनों एवं अन्य दारूण दृश्यों का अंकन किया गया हो, वह चित्र वीभत्स रस के लिये श्रेष्ठ माना गया हैं। इस प्रकार के चित्रण में श्मशान, घातक साधन, दारूण दृश्य तथा घृणास्पद कथाप्रसंग आदि के विषय अंकित किये जाते हैं। असन्तुलित रेखाओं के साथ भद्दे और चितकबरे नीले रंग का प्रयोग देखने को मिलता है, जिसका सहयोग गहरा पीला और कत्थई रंग देता हुआ दिखायी पड़ता है।

चित्रकला में अद्भुत रस

अद्भुत रस का चित्रण विनय, रोमांच एवं चिन्ता से युक्त होता है तथा गरूड़ के मुख के समान झुका हुआ होता है। इस चित्रण में विहवला 24 तथा शंकिता 25 दृष्टियों का प्रयोग होता है। चित्रकारों ने अस्पष्ट, मोटी, भद्दी और उलझी हुई रेखाओं के प्रयोग से आश्चर्य का वातावरण बनाने में सफलता प्राप्त की है।

चित्रकला में शान्त रस

सौम्य आकृतियों का ध्यान-धारण और आसन युक्त मुद्रा में चित्रण शान्त रस की प्रधानता है। इस चित्रण में सम स्थायीभाव होता है और आकृति का रूपविन्यास दैवीय गुणों के अनुकूल सजाया जाता है। ऐसे चित्र इतने तेजस्वी बनाने चाहिऐ कि उनके तेज के समक्ष दूसरा तेज फीका पड़ जाये। उनके आभूषणों की कान्ति भी निजी कान्ति के ही अनुरूप होनी चाहिये। विकारहीन शान्त एवं प्रसन्न नेत्रों तथा बदन आदि की वैराग्य के आधीन शान्तिपूर्ण स्थिति में ही शान्त रस सम्भव है। समरांगण - सूत्रधार में वर्णित मध्यस्था और स्थिरा दृष्टि के अनुरूप ही शान्त रस की व्यवस्था निश्चित है। इस प्रकार के चित्रण में नीले रंग की प्रधानता होती है तथा आकृतियों में साधु-सन्तों का चित्रण होता है।

शिक्षण संस्थाओं में छात्र-संघ की भूमिका

नीतू राजपूत
एम.ए. फाइनल (अंग्रेजी साहित्य)

जोश तन में, होश में हो अगर,
कुछ नही मुश्किल, भुजाओं के लिए।
लौह इच्छाशक्ति है तो,
सैकड़ों द्वार हैं, संभावनाओं के लिए।।

किसी भी देश का विकास तभी संभव है, जब वहाँ की जनता जागरूक हो। बात अगर दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की हैं, तो वहाँ सब बहुत जरूरी है, लेकिन यहाँ यह नहीं हो पा रहा है, ऐसे में व्यापक स्तर पर एक आन्दोलन की आवश्यकता होती है, विभिन्न कॉलेजों एवं महाविद्यालयों में पढ़ रहा युवा वर्ग न केवल इन मठों में ज्ञान को आत्मसात् करता है, बल्कि अपने प्रचार-प्रसार के माध्यम से लोगों को प्रेरित करता है, बशर्ते वे कभी राह न भटकें। ***वर्तमान समय में 65 प्रतिशत युवा वर्ग है, जिसमें 50 प्रतिशत वो हैं जो 25 वर्ष के हैं तथा विभिन्न कॉलेजों में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं,*** परन्तु इस अथाह शक्ति को राष्ट्र निर्माण में लगाने के लिए हमारी सरकार के पास कोई योजना नहीं है। छात्रों को सही शिक्षा मिले, निर्बाध शिक्षा के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध हों तथा शिक्षा के बाद उपयोगिता के लिए रोजगार मिले। इसके बारे में हमारी सरकार के कोई विचार करना चाहिए। इसके लिए छात्र समुदाय को ही एकजुट होकर विचार करना चाहिए। देश की भयानक होती जा रही समस्याओं के प्रति आत्मघाती उदासीनता को आत्मसात् करना तथा छात्रों को प्रभावशाली ढंग से हर छोटी-बड़ी समस्याओं के प्रति सजग रह कर इसे समाज में फैलाना होगा। छात्र संघों के द्वारा ही बहरी हो रही सरकार के कान खुल सकते है, तभी भारत में एक समृद्ध एवं सशक्त वातावरण तैयार होगा, क्योंकि छात्र-युवाओं की परिवर्तनकारी भूमिका के बिना राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा किये जा रहे विश्वास बहाली के प्रयास फलीभूत नहीं होंगे और न ही विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित होगी। ***विश्वविद्यालयों के परिसर जीवंत बनें, स्पन्दनयुक्त हों, राष्ट्र पुनर्निर्माण के गीतों से गूँज उठे तभी एक समृद्ध, स्वाभिमानी एवं सशक्त भारत गढ़ा जा सकेगा।***

आज देश के प्रतिष्ठित संस्थानों में भी आतंकवादी शरण पा रहे हैं। संसद पर हमला करने के दोषियों को दिल्ली विश्व-विद्यालय परिसर से पकड़ा गया। दिल्ली के जाबांज अधिकारी मोहन चन्द शर्मा के कातिलों को कानूनी सहायता देने के लिए जामिया विश्वविद्यालय ने आर्थिक सहायता

उपलब्ध कराई। इन कॉलेजों के प्राध्यापक भी इसमें शामिल हुए, तथा सार्वजनिक रूप से धन एकत्र किया।

अंतर्राष्ट्रीय टाइम पत्रिका ने तीन, चार वर्ष पूर्व पाकिस्तान के विश्वविद्यालयों का अध्ययन कर एक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इन विश्वविद्यालयों में 20 साल पहले ही छात्र संघों की गतिविधियों पर रोक लगा दी, जिससे परिसरों में लोकतांत्रिक गतिविधियॉ ठहर गई। छात्रों की ऊर्जा उन्हें शान्त बैठने की अनुमति नहीं देती, इसलिए उन्होनें इस्लामी जैसे संगठनों का दामन थाम लिया, जिससे परिसरों में आतंकवाद की फसल लहलहा उठी।

कोठारी कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार "छात्र संघ कक्षा के बाहर छात्रों का प्रतिनिधित्व करता है तथा विश्वविद्यालय समय में छात्रों की सहभागिता को बढ़ाता है" आयोग के अनुसार ठीक प्रकार से गठित छात्र संघ स्वशासन एवं स्वअनुशासन के माध्यम से एक स्वस्थ परम्परा की शुरूआत करते है। आज का विद्यार्थी कल नहीं, अपितु आज का और भविष्य का नागरिक है। ***स्वामी विवेकानन्द ने युवाओं का आह्वान किया, '' उतिष्ठत्, जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधत'' अर्थात् '' उठो, जागो और तब तक चलो, जब तक अपने लक्ष्य को प्राप्त नही करते।''***

छात्र संघ की आवश्यकता – आज भारत के अधिकांश विश्वविद्यालयों में छात्रों के प्रत्यक्ष चुनावों पर रोक लगाई जा रही है। छात्र को अपना प्रतिनिधि चुनना प्रतिबंधित कर दिया है। उसी परिसर में कर्मचारी संघ पर आपत्ति नही, अध्यापकों के संघ पर आपत्ति नही, यहां तक कि कुलपतियों के संगठन एवं समिति पर आपत्ति नही, परन्तु यह विश्वविद्यालय जिनके लिये खोले गये हैं, उनके प्रतिनिधि चुनने पर प्रतिबन्ध है। यहां तक कि सरकार भी छात्र संघों पर रोक लगाती है, जिससे उनकी सत्ता को कोई चुनौती ना दे सके। छात्र संघ अपने आन्दोलनों के माध्यम से छात्रों के सामने आदर्श प्रस्तुत करता है।

छात्र संघ की संरचना– छात्र संघ का गठन उसके सदस्य एवं प्रतिनिधि के चुनाव से होता है। प्रतिनिधि सदस्य का चुनाव लोकतांत्रिक प्रक्रिया द्वारा होता है। इसके लिए वह नामांकन फॉर्म भरते हैं तथा प्रचार–प्रसार के माध्यम से सभी विद्यार्थियों को यह आश्वासन देते हैं कि वे उनकी शैक्षिक व्यवस्था में आने वाली समस्याओं का निवारण करेंगे, जिससे वे प्रेरित होकर अधिक से अधिक वोट देते हैं तथा मतदान प्रक्रिया शुरू हो जाती है।

छात्र आन्दोलनों का इतिहास– छात्र आन्दोलनों का अर्थ क्रान्ति नहीं बल्कि जाग्रति है। भारत में आन्दोलनों के लिए एक क्रान्तिकारी एवं ऐतिहासिक मोड़ तब आया जब *1920 ई. में गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन का बिगुल फूंका,* जिसके लिए सभी छात्रों का आह्वान किया। ऐसे कई आन्दोलन पहले भी हुए– *जेपी आन्दोलन गुजरात में 1973 में फीस वृद्धि के कारण, नक्सलवादी आन्दोलन आदि।* ऐसे ही आन्दोलन आज भी विद्यमान हैं– *1990 में 10 हजार छात्र–छात्राओं का कश्मीर मार्च, 2002 में शिक्षा एवं रोजगार विषय पर दिल्ली में 75000 छात्रों का मोर्चा, 2008 में बांग्लादेशी घुसपैठ के विरोध में चिकननेक आन्दोलन तथा 40,000 छात्रों का प्रदर्शन।* यह बताने के लिए पर्याप्त है कि भारत में छात्र प्रभावी ढंग से भूमिका का निर्वहन कर रहे है। अभी कुछ समय पहले *24 नवम्बर 2010 को लखनऊ में विशाल छात्र सम्मेलन, "अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद"* द्वारा किया गया। ये आन्दोलन किसी विशेष व्यक्ति के लिए नही, वरन् देश के सुदृढ़ भविष्य एवं तेजस्वी भविष्य के लिए हैं।

छात्र आन्दोलन की प्रासंगिकता वर्तमान में है, अतीत में थी, और भविष्य में रहेगी, यही शाश्वत सत्य है।

कम शब्दों में कहूँ तो– ***मैं मस्त हूँ मुसाफिर,***

मेरी पाबंद है राहें, राहों को राह बदलने नहीं देता ।
मैं मिट्टी का नन्हा दीपक ही सही,
पर रात का साम्राज्य चलने नहीं देता।
मैं शतरंज की विसात का हूँ, एक नन्हा प्यादा,
राजा को जो शह दूँ, तो फिर सम्भलने नहीं देता।।

किसी भी राष्ट्र एवं समाज के छात्र महत्वपूर्ण अंग हैं। आज वे देश एवं समाज को समृद्ध एवं उन्नत बनाने के लिए सामाजिक एवं आर्थिक पुनर्निर्माण की योजना बनाते हैं, तो कल वे देश एवं समाज के कर्णधार बनकर अपनी योजना को क्रियान्वित करेंगे।

जिन्दगी एक अभिलाषा है, अपने आप में परिभाषा है।
संवर गई तो जिन्दगी है, नहीं तो एक तमाशा है।।

छात्र शक्ति स्वाभिमानी, स्फूर्त, बुलन्द हौसलेवाली वेगवती धारा है, जिसने रूकना नही सीखा इसे प्रवाहित होते जाना है। इस धारा को सुविचारित ढंग से प्रवाहमान बनाये रखने से ही राष्ट्र का निर्माण संभव है। आज के युवाओं से अपेक्षा है कि वे अपनी मिट्टी की गहराई का स्पर्श करें, अपनी अस्मिता को तलाश करें। भारत की सामाजिक जिन्दगी और

लोगों के मन से रेशे-रेशे का एहसास करे और उनके दिलों की धड़कन बन जाये। आम आदमी की जिन्दगी और मानवता को सजा संवारकर भारत में शान्ति पूर्ण वातावरण पैदा करें। इस दिशा में मिलने वाली सफलता को मंजिल नही, पड़ाव समझें, और सफलताओं के अन्तहीन क्रम को जारी रखें, ताकि उनके पदचिन्हों पर उनकी दूसरी पीढ़ी भी उनके समस्त पग से भविष्य की ओर जाये। और अन्त में मैं आज के अशान्त युवाओं से कहना चाहूँगी-

हैं हम से कायम विकास देश, हम हैं देश के निर्माता,
आँखें हैं हम देश की जिसमें, देश हमारा सपने सजाता।
ये जीवन हमारे लिए नहीं, ये जीवन हैं देश की मधुशाला,
न बनने दें व्यापार शिक्षा को, निर्मित हों ऐसी पाठशाला।।

संगीत के क्षेत्र में उज्जवल भविष्य के अवसर

डा. नम्रता मिश्रा
अध्यक्ष, संगीत गायन विभाग
आर.सी.ए. गर्ल्स पी.जी. कालेज, मथुरा

प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के विकास में संगीत का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। मानव जीवन में हर क्षण, पर्व, परिस्थिति एवं स्थान के अनुसार सांगीतिक विभिन्नताऐं तो होती हैं, किन्तु संगीत की अनिवार्यता सर्वविदित है। संगीत का अर्थ है, जिससे मनोभावों की रागात्मक स्वरलहरियाँ झंकृत हों। संगीत का सम्बन्ध कल्याणकारी भावों से होता है। आधुनिक भौतिकतावादी युग में मानव मन अत्याधिक तनाव में रहता है। मानव मन की इस तनाव-मुक्ति के लिए संगीत का बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान है।

वर्तमान समय में अधिकांश माता-पिता अपने बच्चों को उस विषय में शिक्षा देने का प्रयत्न करते हैं, जिसमें उज्जवल एवं सुरक्षित भविष्य की सम्भावनाऐं हों आज से चालीस-पचास वर्ष पूर्व तक संगीत के क्षेत्र में अध्यापन एवं संगीत शिक्षण संस्थान चलाने का कार्य ही अधिक प्रचार में था, किन्तु वर्तमान समय में संगीत के क्षेत्र में शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र-छात्राओं के लिए रोजगार के अनेकानेक अवसर उपलब्ध हो गए हैं जिसके परिणाम स्वरूप आज कई छात्र-छात्राऐं संगीत विषय चुनने की इच्छा रखते हैं।

संगीत एव श्रमसाध्य विषय है। इसमें अधिक समय, अधिक मेहनत, कला मर्मज्ञ दृष्टिकोण एवं किसी हद तक कुछ जन्मजात गुणों का होना आवश्यक होता है। संगीत के विद्यार्थियों में कुछ गुण स्वतः ही आ जाते हैं, जैसे एकाग्रता, सौन्दर्यपरक दृष्टि, मानसिक तनाव से मुक्ति तथा स्थिर एवं प्रसन्नचित्त व्यक्तित्व आदि। संगीत एवं अन्य ललित कलाओं से जुड़े छात्रों को अपने शौक अथवा रूचि को ही अपना व्यवसाय बनाने का अवसर मिलता है जिससे उन्हें आजीवन अपने कार्य में अरूचि नहीं होती है।

शॉपेन हॉवर के अनुसार - "केवल संगीत ही ऐसी कला है तो श्रोताओं से सीधा सम्बन्ध रखती है। इसे किसी भी माध्यम की आवश्यकता नहीं पड़ती हैं।"

संगीत जिन दो धरातलों पर टिकी है वह है- स्वर और लय। ये दोनों ही माध्यम अमूर्त हैं। इन्हें छुआ नहीं जा सकता है। ना ही किसी पुस्तक एवं कलम के माध्यम से सिखाया जा सकता है। इसे तो सिर्फ गुरूमुख से सुनकर आत्मसात किया जा सकता है तथा कठिन अभ्यास के माध्यम से कंठस्थ किया जा सकता है। श्रव्य-ध्वनि की प्रकृति व्यक्तित्व के प्रकृति निर्धारण में अहम् भूमिका निभाती है।

वर्तमान समय में तकनीकी क्रान्ति ने संगीत जगत में भी क्रान्ति सी ला दी है। आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं विभिन्न चैनलों में संगीत तकनीकी के क्षेत्र में अनेक पदों की मांग होती है। सिर्फ गायक या संगीत निर्देशक बनकर ही नहीं वरन् आज कई छात्र रिर्काडिंग, एंकरिंग, संगीत समीक्षा, ध्वनि संयोजन तथा टंकण आदि के क्षेत्र में भी अपना भविष्य तलाश रहे हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं एवं समाचारपत्रों हेतु भी संगीत के जानकारों के लिए अपार सम्भावनाऐं छुपी हुई है। रियेलिटी शोज के माध्यम से भी इस क्षेत्र में नाम और धन कमाया जा सकता है।

आज भारतवर्ष में संगीत के प्रचार-प्रसार हेतु अनेकों संगीत संस्थाऐं है जो ना सिर्फ छात्रों को संगीत अध्ययन का अवसर देती हैं बल्कि उन्हे मंच एवं रोजगार भी मुहैया कराती हैं। ललित कलाओं के विद्यार्थी अपने स्वयं के व्यक्तित्व - विकास के साथ ही समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। चिकित्सा जगत् में भी वर्तमान समय में संगीत का प्रयोग अब अधिक से अधिक प्रमाणों के आधार पर किया जाने लगा है। आज कई कलाकार संगीत चिकित्सक के रूप में भी स्वयं को स्थापित कर चुके हैं।

आक्रामकता, अपराधिक प्रवृत्ति, हीन भावना आदि खतरनाक मानसिक विकारों को कम करनें में संगीत अत्यन्त कारगर सिद्ध होता है। 1962 ई. में बर्लिन के अर्न्तराष्ट्रीय चिकित्सा परिषद् सम्मेलन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि संगीत स्वरावलियों का मास्तिष्क तंत्र की उन मांस पेशियों पर

बहुत अनुकूल प्रभाव पड़ता है, जो भावनाओं अथवा संवेदनाओं से सम्बन्धित होती हैं। ये मांस पेशियॉ संगीत लहरियों के स्पन्दन द्वारा सक्रिय हो जाती हैं। इतना ही नहीं भय, उत्तेजना, तनाव, अनिद्रा आदि स्थितियों में भी संगीत का आश्चर्यजनक प्रभाव देखा जा सकता है।

संगीत के क्षेत्र में भविष्य बनानें के लिए महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों एवं अन्य शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से स्नातक, परास्नातक, शोध एवं नेट की परीक्षाऐं उत्तीर्ण करने के साथ ही अनेकों ऐसी सरकारी एवं गैर सरकारी योजनाऐं तथा शिक्षा आयोग हैं, जो संगीत के क्षेत्र में सुरक्षित भविष्य हेतु सुविधाऐं एवं आर्थिक मदद उपलब्ध करा रही हैं। इनमें से कुछ शिक्षण संस्थाओं की सूची इस प्रकार हैं:-

- भातखण्डे संगीत संस्थान, लखनऊ
- वेणु नाद कला केन्द्र, वृन्दावन
- प्रयाग सेन्टर समिति, इलाहाबाद
- अभियान सेन्टर फॉर डांस, नई दिल्ली
- अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय, मिरज-महाराष्ट्र
- गन्धर्व महाविद्यालय, नई दिल्ली
- कथक केन्द्र, नई दिल्ली
- श्री राम भारतीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
- प्राचीन कला केन्द्र, चण्डीगढ़
- डांस एण्ड कल्चर सोसायटी, नई दिल्ली
- ललित कला अकादमी फाउण्डेशन ट्रस्ट, मैसूर
- नालंदा नृत्य कला महाविद्यालय, मुम्बई
- त्रिकला गुरूकुलम्, नई दिल्ली
- भारतीय संगीत सदन, नई दिल्ली
- कथक केन्द्र, इलाहाबाद
- दर्पण अकादमी ऑफ परफार्मिंग आर्टस, अहमदाबाद
- ध्रुपद संस्थान, भोपाल
- त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली
- नुपुर कला आश्रम, नई दिल्ली
- राष्ट्रीय कथक संस्थान, लखनऊ
- बिरजू महाराज परम्परा, नई दिल्ली
- पं. बिदुर मलिक ध्रुपद अकादमी, इलाहाबाद
- स्वरमयी गुरूकुल, पुणे
- तानसेन संगीत महाविद्यालय, हापुर, गाजियाबाद
- इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, छत्तीसगढ़
- संगीत एवं मंचकला संकाय, का.हि.वि.वि.वाराणसी

राज्य पुरस्कार से सम्मानित

एम.ए. प्रथम वर्ष अंग्रेजी की छात्रा *कु. अमिषा भारद्वाज* पुत्री श्री अक्षय भारद्वाज को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री बी.एल. जोशी ने वर्ष 2011 के स्काउट एवं गाइडिंग के राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित किया। उक्त राज्यपाल पुरस्कार उत्तर प्रदेश भारत स्काउट एवं गाइड प्रादेशिक प्रधान केन्द्र लखनऊ द्वारा ईश्वर, देश तथा समाज सेवा के लिये तैयार रहने तथा मानवता की सेवा में रत रहने के लिये प्रदान किया जाता है।

कराटे-डो में प्रथम

महाविद्यालय की छात्रा *कु. दीपमाला शर्मा* ने प्रथम अर्न्तजिला कराटे-डो चैम्पियनशिप - 2013 में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया तथा यू.पी. युद्धज्ञान कराटे-डो चैम्पियनशिप - 2013 में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता

जायण्ट्स ग्रुप मथुरा द्वारा जायण्ट्स सप्ताह के अन्तर्गत होटल बृजवासी रॉयल में आयोजित अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता में महाविद्यालय की तबला विभाग की छात्राओं कु. प्रिया सिंह, कु. खुशबू अग्रवाल व कु. रीनू सिंह ने भाग लिया व तृतीय स्थान प्राप्त किया।

वृन्दावन बाल विकास मंच द्वारा आयोजित 23 वें मण्डलीय शैक्षिक बाल मेला एवं युवा महोत्सव के अन्तर्गत एकल नृत्य प्रतियोगिता में महाविद्यालय की छात्रा कु. प्रिया सिंह ने भाग लिया तथा प्रथम स्थान प्राप्त किया।

माहेश्वरी सभा समिति एवं माहेश्वरी महिला मण्डल मथुरा द्वारा आयोजित एकल नृत्य मण्डल प्रतियोगिता में भी कु. प्रिया सिंह ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया एवं मिस दीपावली प्रतियोगिता के अन्तर्गत "कैट वॉक" प्रतियोगिता में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर

आर.सी.ए. महाविद्यालय का सात दिवसीय एन.एस.एस. शिविर 12 से 18 मार्च 2013 तक ''कल्याणं करोति'' संस्था, सरस्वती कुण्ड में आयोजित किया गया। शिविर में महाविद्यालय की दो इकाइयों के अन्तर्गत 100 छात्राओं ने भाग लिया।

शिविर के अन्तर्गत वृद्धजन सर्वे, पल्स पोलियो अभियान, विकलांग बच्चों की प्रतियोगितायें, साक्षरता आदि समाज सेवा से सम्बन्धित कार्यक्रमों में छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इसमें अतिरिक्त आग से सुरक्षा पर भी एक व्याख्यान आयोजित किया गया। शिविर का आयोजन योजनाधिकारी डा. भारती सागर एवं श्रीमती मंजू दलाल के निर्देशन में हुआ।

अन्तर्महाविद्यालयी प्रतियोगितायें सम्पन्न

आर.सी.ए. महाविद्यालय में वाद–विवाद, हिन्दी निबन्ध, अंग्रेजी निबंध प्रतियोगिताओं का अर्न्तमहाविद्यालयी स्तर पर आयोजन किया गया। जिसमें सभी प्रतियोगिताएँ अलग–अलग आयोजकों द्वारा आयोजित करायी गयी, जिसमें वाद–विवाद प्रतियोगिता सावित्री मूलचन्द अग्रवाल की समृति में कन्हैया लाल जी द्वारा, हिन्दी निबन्ध श्रीमती शान्ती देवी स्मृति में बैजनाथ सर्राफ द्वारा तथा अंग्रेजी निबन्ध श्री किशन लाल सर्राफ स्मृति में गजानन्द मित्तल जी द्वारा आयोजित करायी गयी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथी श्री कुलदीप नारायण श्रीवास्तव थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि, कालेज प्राचार्या तथा निर्णायक मण्डल द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलन कर किया गया।

इसमें हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता में अमरनाथ कन्या महाविद्यालय की श्वेता शर्मा प्रथम, बी.डी.एम. शिकोहाबाद की अनुराधा यादव द्वितीय, टीकाराम कन्या महाविद्यालय अलीगढ़ की पूजा सिंह तृतीय रही तथा अंग्रेजी निबन्ध प्रतियोगिता में बैकुन्ठी देवी की दीक्षा बनर्जी प्रथम, आर.सी. ए. महाविद्यालय की निमरा लोदी द्वितीय और टीकाराम कन्या महविद्यालय की उज़्मा हाशमी तृतीय स्थान पर रही। वाद–विवाद प्रतियोगिता में आ.सी.ए. महावि. की निमरा लोदी प्रथम, बैकुन्ठी देवी कन्या महविद्यालय की उपासना पाण्डेय द्वितीय और दुर्गेश सारस्वत तृतीय रही इसके अतिरिक्त अचल वैजन्ती पुरस्कार भी टीम स्तर पर प्रदान किये गये, जिसमें हिन्दी निबंध में बी.डी.एम. कालेज शिकोहाबाद को, अंग्रेजी निबंध में आर.सी.ए. महावि. मथुरा तथा वाद–विवाद में बैकुन्ठी देवी आगरा को यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

इन प्रतियोगिताओं के निर्णायक मण्डल में हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में श्रीमती साधना नागर तथा डॉ. शरद सक्सैना, अंग्रेजी निबंध प्रतियोगिता में डॉ. शिखा मालवीय तथा डॉ. विनय लक्ष्मी जी और वाद–विवाद प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल में के.आर. कालेज के पूर्व प्राचार्य डा. कुलदीप भार्गव, डा. अनिल सक्सैना, डा. प्रतिमा गुप्ता थे। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन कालेज प्राचार्या डा. प्रीति जौहरी ने दिया। इस अवसर पर प्रबन्ध समिति के प्रबन्धक श्री गिरीश अग्रवाल, श्री राजेन्द्र कुमार सर्राफ, श्री ललित किशोर तथा कालेज की शिक्षिकाऐं डा. गायत्री सिंह, डा. राजकुमारी पाठक, डा. हितैषी सिंह, डा. कल्पना वाजपेयी, डा. अन्जु बाला, डा. संध्या श्रीवास्तव, डा. नीतू गोस्वामी, डा. सीमा शर्मा आदि उपस्थित थीं तथा संचालन डा. भारती सागर ने किया।

❍ **Programmes -**

Hindi Divas	14th Sep 2013
NSS Foundation Day	24th Sep 2013
Parents Teacher Meeting	11th Oct 2013
Parents Teacher Meeting	23th Nov 2013
Parents Teacher Meeting	07th Dec 2013
7 Day NSS Camp (Tentative)	18th - 24th Dec 2013
Pre-University Exams	13th - 22nd Jan 2014

❍ **Departmental Activities / Deparment-**

Education, Sociology, Music Vocal & Instrumental	- October
Home Science, Psychology, Drawing and Painting	- November
Hindi, English & Sanskrit	- December
Commerce, Economics and Political science	- January

❍ **Holidays**

Jamat-UL-Vida	08-08-2013
Raksha Bandhan	20-08-2013
Janammashtami	28-08-2013
Nandotsava	29-08-2013
Vishvakarma Pooja	17-09-2013
Mahatma Gandhi Jayanti	02-10-2013
Pitravisarjan Amavasya	04-10-2013
Dussehra Holiday Id-UL-Juha (Bakrid) Valmiki Jayanti	12th - 19th Oct 2013
Karva Chauth	22-10-2013
Deepawali Holidays	01- 05 Nov 13
Akshay Navmi	11-11-2013
Dev Probodhmi Ekadashi	13-11-2013
Moharram	14-11-2013
Guru Teg Bahadur Balidan Divas	24-11-2013
Dr. BRA Nirvan Divas	06-12-2013
Christmas Day and Winter Break	25-12-13 to 01-01-14
Makar Sankranti	14-01-2014
Mahashivratri	27-02-2014
Holi Vacation	16-03-14 to 18-03-14

Note : The List is Tentative & Subject to change as per circumstances.

Memories...

1st Prize Winner of the Inter College
Debate Competition 2012

Inter College Competitions 2012

Trophy Winners of Inter College
Essay Competition 2012

Justice J. S. Verma Retd. Chief Justice of India
delivering the Key note address
in the International Seminar 2013

A Meeting of Parents - Teachers Association

Voters Awareness Programme

Editor : Dr. Anju Bala Agrawal
Printer : Vimal Press, Vrindavan Gate, Mathura
Publisher : Dr. Preeti Johari, Principal, R.C.A., Girls' (P.G.) College, Mathura Ph.: 0565-2505956